भारत में दलीय व्यवस्था भाग3

प्रदोष कुमार

भारत के विशाल सामाजिक आर्थिक धार्मिक परिवेश ने बहुत अधिक दलों को जन्म दिया है । जो समानता वैचारिक एवं संगठनात्मक दृष्टिकोण से अलग हैं। कार्य शैली तथा चुनाव आयोग द्वारा दी गई मान्यताओं के आधार पर दलों को दो भागों में बांटा जा सकता है:

1. राष्ट्रीय दल
2. क्षेत्रीय दल

*राष्ट्रीय दल

आजकल की दलीय प्रणाली राजनीतिक दलों के बाहुल्य पर आधारित है। राष्ट्रीय अथवा अखिल भारतीय दल हुआ है जिनका कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर के विषयों और मुद्दों पर आधारित है जिनको संसद एवं राज्य विधान मंडलों में पर्याप्त मत प्राप्त हुए हैं। 2 दिसंबर 2000 को भारत के चुनाव आयोग द्वारा दलों को राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों में मान्यता देने का नया प्रावधान लाया गया चुनाव आयोग के अनुसार अगर कोई दल :-

कम से कम चार राज्यों या उससे अधिक राज्यों में लोकसभा के चुनाव या विधानसभा के चुनाव में पड़े वैध मतों का 6% प्राप्त करता है।

Scanned with CamScanner

लोकसभा में 4 स्थान प्राप्त किए हो अथवा लोकसभा के चुनाव में किसी भी तीन राज्यों में लोकसभा के कुल स्थानों का 2% स्थान प्राप्त किया हो तो उस दल को राष्ट्रीय दल की मान्यता दी जाती है।

किसी भी दल को राष्ट्रीय दल केवल उसके समर्थन के आधार पर ही माना जाता है। प्रत्येक चुनाव में इस आधार पर मिले मतों के अनुसार अगले चुनाव के लिए दलों को राष्ट्रीय दल घोषित किया जाता है। राष्ट्रीय दलों को अखिल भारतीय दल भी कहा जा सकता है उनके कार्यक्रमों नीतियों विचारधाराओं और रणनीतियों में राष्ट्रीय मुद्दों पर जोर होता है चुनाव आयोग द्वारा घोषित राष्ट्रीय दल को कानूनी रूप से उसका चुनाव चिन्ह पूरे देश के लिए एक होता है। हाल के चुनावों के परिणाम स्वरूप चुनाव आयोग ने विभिन्न दलों को राष्ट्रीय दल का दर्जा दिया है। उसमें से प्रमुख है:- कांग्रेश ,भारतीय जनता पार्टी, बहुजन समाजवादी पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ,जनता दल (यू), लोक जनशक्ति पार्टी इत्यादि।

सांस्कृतिक विशिष्टता तथा क्षेत्रीय विकासात्मक आवश्यकताओं की अपेक्षा ना हो इसलिए क्षेत्रीय दलों का जन्म हुआ क्योंकि भारत एक बहुभाषी बहुत धार्मिक और बहु जाति देश है। सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों के मन में बहुसंख्यक संस्कृति में रच बस जाने तथा अपनी संस्कृति के खोने का डर लगा रहता है। भारत का चुनाव आयोग इन क्षेत्रों के सीमित भूमिका वाले दलों को मान्यता इस आधार पर प्रदान करता है कि क्षेत्रीय दल हुआ है जिन का कार्यक्रम किसी क्षेत्र विशेष तक सीमित

Scanned with CamScanner

होता है तथा जिसने लोकसभा या उस राज्य के विधानसभा में पड़े वैध मतों का 6% मत प्राप्त किया हो राज्य विधानसभा में 2 सीट प्राप्त की हो अथवा दल ने विधानसभा के कुल सीटों की 3% सीट 3 सीट इनमें से जो भी ज्यादा हो पर जीत हासिल की हो तो उसे चुनाव आयोग द्वारा क्षेत्रीय दल की मान्यता प्रदान की जाती है और उस राज्य के लिए उस का चुनाव चिन्ह प्रदान करता है।

कांग्रेस:- कांग्रेस पार्टी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अंग है जो राष्ट्र के गौरव का प्रतीक है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885 ईसवी में मुंबई में हुई थी। यह भारत का ही नहीं समस्त विकासशील देशों में सबसे पुराना राजनीतिक दल है या राष्ट्रीय आंदोलन में भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों को एक साथ लाने में सफल रहा। शुरुआती दौर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का एक सभ्रांत वर्ग का संगठन था फिर गांधी जी के नेतृत्व में या जन आंदोलन का पर्याय बन गया। राष्ट्रीय आंदोलन में इसकी भूमिका मील का पत्थर सिद्ध हुई। देश के आंदोलन में भागीदारी एवं सफल नेतृत्व के कारण अंतरिम सरकार का गठन कांग्रेस के द्वारा ही किया गया स्वतंत्रता के बाद भी जन आकांक्षाओं एवं लोगों के विश्वास ने देश की बागडोर कांग्रेश के हाथ में ही दे दी। यह देश की राजनीति में अग्रणी भूमिका निभाने में सफल रहा इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक संभ्रांत वर्ग, अभिजात वर्ग ,शिक्षित मध्यम वर्ग के मंच से सर्ववर्गीय राजनीतिक दल का रूप ले लिया।

Scanned with CamScanner

स्वतंत्रता के बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस समाजवाद धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र के प्रति वचनबद्ध होकर राष्ट्र निर्माण में जुट गई। हालांकि स्वतंत्रता के बाद महात्मा गांधी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के राजनीतिक व्यवस्था से दूर रहने के पक्ष में थे परंतु अन्य राजनीतिक राष्ट्रवादी नेताओं के दबाव में वह कांग्रेस की राजनीतिक पारी के लिए राजी हो गए ताकि यह भारत के सामाजिक आर्थिक विकास का जरिया बने 1952 से 1967 के आम चुनावों में कांग्रेस ने भारत के राजनीतिक मंच पर अपने वर्चस्व को कायम रखा। अधिकांश राज्य में कांग्रेस की ही शासन था परंतु 1967 के आम चुनावों के बाद स्थिति बदल गई गैर कांग्रेसी दलों ने करीब 9 राज्यों पर अपना कब्जा कर लिया। कांग्रेस की असफलता का कारण आंतरिक मतभेद एवं विरोधी दल के समझौते थे। विरोधी दलों के नेताओं को अवस्था की जनता ने पहले की अपेक्षा अधिक असंतोष एवं निराशा है इसका फायदा उठाया जा सकता है। कांग्रेस का संगठनात्मक स्वरूप अब कमजोर दिखने लगा रजनी कोठारी ने इसे प्रमुख दल प्रणाली के पतन की शुरुआत कहा हालांकि कांग्रेस के बेचारी एवं व्यक्तिगत मतभेद स्वतंत्रता पूर्वी दिखने लगे थे परंतु महात्मा गांधी जवाहरलाल नेहरू सरदार वल्लभभाई पटेल जैसे नेता गुटबाजी को रोककर रखने में सफल रहे थे। नेहरू केंद्र निधन के बाद यह सत्ता संघर्ष के रूप में सामने आया। जिसने अंततः 12 नवंबर 1969 में कांग्रेस को विभाजन की ओर उन्मुख किया। कांग्रेस का विभाजन दो घटकों में हो गया। एक घटक आगे चलकरकॉग्रेस (आई) बना तथा दूसरा घटक कांग्रेस पुराना के नाम से

Scanned with CamScanner

जाना जाने लगा। इस नई व्यवस्था से कांग्रेस की पुरानी संगठनात्मक संरचना जो लोकतंत्र के मूल्यों पर आधारित थी, का ह्रास हुआ और एक अधिक केंद्र के संगठनात्मक समूह का विकास हुआ। 70 के दशक में कांग्रेस एक राजनीतिक पिरामिड के रूप में तब्दील हो गई । नई कांग्रेस पर इंदिरा ने अपना संपूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लिया। अब कांग्रेस के किसी भी फैसले में इंदिरा गांधी की वर्चस्व कायम होने लगा। इसी समय भारतीय राजनीति की नई करवट ले रही थी। नए उभरते वर्ग विशेष का राजनीतिक सत्ता में हिस्से की मांग करते हुए अधिक सक्रिय होने शुरू हो गए थे। पुराने कांग्रेसी जो भारतीय राजनीति के पटल पर बदलाव चाहती थी। लेकिन अपने बलबूते पर उसके लिए यह संभव नहीं था अंत उस काबिल है जनता पार्टी में हो गया इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली सरकार इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेसी ने 1971 के संसदीय चुनाव में और 1972 के विधानसभा चुनावों में अच्छा प्रदर्शन किया। लोकसभा की 518 सीटों में से 351 सीटों पर अपनी जीत कायम की।इंदिरा गांधी की जीत के साथ-साथ देश में महंगाई तथा असंतुष्ता एवं विरोध में भी बढ़ोतरी हुई। 1974 में जयप्रकाश नारायण ने इंदिरा गांधी के भ्रष्टाचार एवं महंगाई के खिलाफ जन आंदोलन छेड़ दिया। देश के हर कोने से कहीं धीमी और कहीं तेज आवाज के साथ सभी वर्गों के लोग जन आंदोलन का हिस्सा बने। इंदिरा गांधी ने आंतरिक आपातकाल की घोषणा कर दी इंदिरा गांधी किए भूल 1977 के आम चुनाव में कांग्रेस की करारी हार के साथ सामने आई ।केंद्र में पहली बार गैर कांग्रेसी सरकार का गठन हुआ

Scanned with CamScanner

जनता पार्टी ने जनसत्ता पर कब्जा किया इस हार को कांग्रेस बर्दाश्त नहीं कर पाई और टूट कर बिखर गई। कांग्रेस गांधी इंदिरा गांधी के साथ वाली कांग्रेसी एवं स्वर्ण सिंह के नेतृत्व में कांग्रेस का गठन हुआ 1980 के आम चुनाव में कांग्रेसी पुणे दो तिहाई बहुमत के साथ सत्ता में लौट आई और उसने लोकसभा और विधानसभा के चुनाव में 9 में से 8 राज्यों पर कब्जा कर लिया।

सन 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या कर दी गई और राजीव गांधी देश के प्रधानमंत्री बने। 1985 के आम चुनावों में कांग्रेस ने अभूतपूर्व सफलता पाई कांग्रेस ने अपने सहयोगी दलों के साथ मिलकर 415 सीटों पर कब्जा किया।इंदिरा गांधी की हत्या ने पूरे देश में कांग्रेस के लिए भावनात्मक पैदा कर दी परंतु अगले चुनाव में कांग्रेस की पराजय हुई हालांकि कांग्रेस सबसे बड़े दल के रूप में उभर कर सामने आई परंतु स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं कर सकी। 1991 के के चुनाव प्रचार के दौरान राजीव गांधी की हत्या कर दी गई पूरे देश में शोक की लहर दौड़ गई मगर चुनाव परिणाम स्पष्ट नहीं के चुनाव प्रचार के दौरान राजीव गांधी की हत्या कर दी गई पूरे देश में शोक की लहर दौड़ गई मगर चुनाव परिणाम स्पष्ट नहीं था। लोगों को लगा था शायद कांग्रेस पूर्ण बहुमत से आएगी परंतु कांग्रेस को केवल 232 सीटों पर ही संतोष करना पड़ा हालांकि कांग्रेस की ही सरकार बनी और नरसिम्हा राव इसके प्रधानमंत्री बने परंतु कांग्रेस ने आने वाले चुनावों में अपना प्रदर्शन अच्छा नहीं किया। 1996 एवं 1998 के चुनावों में कांग्रेस की

Scanned with CamScanner

सीटों की संख्या क्रम संख्या 40 एवं 141 रह गई थी। राज्य विधानसभाओं में इसकी स्थिति अच्छी नहीं रही हालांकि कांग्रेस राजनीतिक दल के रूप में धर्मनिरपेक्ष समाजवाद एवं लोकतंत्र के प्रति अपनी वचनबद्धता को दोहराते रही है ,परंतु सशक्त नेतृत्व की कमी ने कांग्रेस के संगठनात्मक वर्चस्व को कमजोर किया। जवाहरलाल नेहरू से लेकर डॉ मनमोहन सिंह तक के सफर में कांग्रेस ने काफी उतार-चढ़ाव का सामना किया। 2004 एवं 2009के लोकसभा के चुनाव में कांग्रेस की स्थिति अच्छी हुई और कांग्रेस आई लगातार दो बार सत्ता में आने में सफल रही।

भारत की मिश्रित अर्थव्यवस्था उसकी समाजवादी एवं उदारवादी लोकतांत्रिक विचारधारा की द्योतक है ।इस अर्थव्यवस्था के अंतर्गत समाजवादी एवं पूजीवादी दोनों घटकों को समान भागीदारी का मौका मिला। जो आगे चलकर भारत को जन कल्याणकारी राज्य की स्थापना में मददगार साबित हुआ। कांग्रेस ने अपनी समाजवादी नीति के तहत भारतीय बैंकों एवं बीमा सेवाओं में राजकीय नियंत्रण की पहल कर एक कीर्तिमान स्थापित किया। स्वतंत्रता के तुरंत बाद नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस ने नियोजन की प्रक्रिया के अंतर्गत पंचवर्षीय योजना को लागू किया साथ ही साथ कृषि, ग्रामीण योजना ,शिक्षा एवं बाल कल्याण जैसे अनेक क्षेत्रों को राष्ट्रीय महत्व का बताकर समुचित कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करवाई । जिसमें भूमि सुधार शैक्षणिक सुधार सुविधाएं रोजगार के अवसरों का सृजन एवं जमीनदारी व्यवस्था की समाप्ति और भूमिहीन किसानों को ऋण पर बल दिया। कांग्रेस अपनी

Scanned with CamScanner

धर्मनिरपेक्ष नीति के साथ ही अल्पसंख्यकों के अधिकारों तथा हितों की रक्षा के प्रति कटिबद्ध है। 1971 के चुनाव घोषणा पत्र में कांग्रेस ने गरीबी हटाओ का नारा दिया। जिसके कारण कांग्रेस की लोकसभा में दो तिहाई बहुमत प्राप्त हुआ। जहां तक गरीबी के मुद्दे की बात है। यह प्रत्येक दल का चुनावी मुद्दा रहा परंतु किसी भी दल ने इसे गंभीरता से नहीं लिया । 1977 और उसके बाद के चुनावों में कांग्रेस अपने सामाजिक आधार वाले मतदाताओं विशेषता ब्राह्मण, मुसलमान, अनुसूचित जातियों के लिए चुनावी घोषणाओं में गरीबी, कृषि सुधार , औद्योगिक विकास, सर्वधर्म समभाव, स्वास्थ्य , शिक्षा मूल्य वृद्धि जैसे मुद्दों को प्राथमिकता देती रही है।

Scanned with CamScanner